6

यीशु ने बपतिस्मे के विषय में सिखाया

''यीशु ने उनके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो'' (मत्ती 28:18, 19)।

यूहन्ना और यीशु दोनों ने ही पृथ्वी पर अपनी सेवकाइयों में बहुत से लोगों को बपतिस्मा लेने के लिए समझाया था (मत्ती 3:5, 6; यूहन्ना 4:1)। उनके परिवर्तितों ने उन्हें परमेश्वर के संदेशवाहकों के रूप में स्वीकार किया, उनके अनुयायी बन गए, पापों का अंगीकार किया, क्षमा पानी चाही, उनके संदेश के अनुसार पापों से मन फिराया, और आने वाले मसीह और उसके राज्य से सम्बन्धित निर्देश को माना। उन्होंने ''पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा'' लिया क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट था (मत्ती 3:2; लूका 3:3)। उन्हें आने वाले राज्य की तैयारी के लिए बपतिस्मा दिया गया था, अत: यह स्वाभाविक ही है कि राज्य का बपतिस्मा तैयारी के इस बपतिस्मे की तरह ही था।

प्रत्युत्तर

इस तथ्य का कि यूहन्ना और यीशु द्वारा सिखाया जाने वाला बपतिस्मा (यूहन्ना 3:22, 26; 4:1) लेने के लिए बहुत से लोग आ रहे थे, (जिनमें फरीसी और सदूकी भी थे, मत्ती 3:7) अर्थ है कि बपतिस्मे की यह बात सारे यहूदिया और यरदन के आस पास के क्षेत्रों में फैल गई थी (मत्ती 3:6)। यीशु के चेले, जो यह बपतिस्मा देते थे (यूहन्ना 4:2) और बाद में उन्होंने नई वाचा के बपतिस्मे का प्रचार किया अवश्य ही इसके अर्थ तथा उद्देश्य को समझते होंगे।

तैयारी का यह बपतिस्मा लोगों में बहुत प्रसिद्ध था, इसलिए यदि नई वाचा का बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए नहीं था, तो बड़ी सावधानीपूर्वक व्याख्या आवश्यक थी। इसके बजाय, पतरस ने नई वाचा के बपतिस्मे के उद्देश्य वही बताए (प्रेरितों 2:38)। इसकी समानताओं ने जिनकी योजना स्पष्टत: परमेश्वर ने बनाई थी, इसे तैयारी का एक उत्कृष्ट

बपतिस्मा बना दिया, चाहे यह इस बात में विशेष रूप से अलग था कि इसमें यीशु के लहू में विश्वास के आधार पर या उसके नाम से या मसीह के रूप में उसके अधिकार से बपतिस्मा नहीं दिया जाता था। इसे लेने वाले स्वर्ग के राज्य अर्थात कलीसिया अर्थात मसीह में प्रवेश नहीं करते थे, न ही इसे लेने वालों को पवित्र आत्मा का दान मिलता था। तैयारी के इस समय के दौरान यूहन्ना, यीशु और प्रेरित इस्राएल को (मत्ती 10:6; 15:24) मसीह के आने पर उसे स्वीकार करने के लिए तैयार कर रहे थे, लेकिन वे उन्हें मसीह के रूप में यीशु में परिवर्तित नहीं कर रहे थे। इसलिए, यह बपतिस्मा बेशक आने वाले मसीह में विश्वास पर आधारित था, परन्तु यीशु को मसीह मानकर उसमें विश्वास पर आधारित नहीं हो पाया होगा।

यीशु ने बपतिस्मे की आज्ञा दी

यीशु ने सिखाया कि यरूशलेम से *आरम्भ करके* उसके नाम में *सब जातियों* के लिए पापों की क्षमा का प्रचार किया जाएगा (लूका 24:47)। इस शिक्षा में विश्वास और बपतिस्मा शामिल थे (मत्ती 28:18, 19; मरकुस 16:15, 16)। पुनरुत्थान के चालीस दिन बाद (प्रेरितों 1:1, 2) स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार पाने के लिए यीशु परमेश्वर के दाहिने हाथ जा बैठा (इफिसियों 1:19-23; 1 पतरस 3:22)। इसके लगभग दस दिन बाद पिन्तेकुस्त के दिन, यरूशलेम में प्रेरितों ने पहली बार यीशु मसीह के नाम में पापों की क्षमा का प्रचार किया। यह संदेश सब जातियों में सुनाया जाना था (लूका 24:47)।

क्रूस पर का वह डाकू, जिसे बहुत से लोग नई वाचा में पापों की क्षमा पाने के लिए उदाहरण के रूप में इस्तेमाल करते हैं, यीशु के नाम में पापों की क्षमा के पहली बार प्रचार से पहले मरा था (यूहन्ना 19:31, 32)। पापों की क्षमा पाने के लिए नई वाचा के अधीन किए जाने वाले कामों के लिए वह हमारा आदर्श नहीं हो सकता, क्योंकि वह यीशु के नाम में पापों की क्षमा की पेशकश से पहले ही मर गया था।

इस्राएल के लोगों के लिए पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा कोई नई बात *नहीं* थी। नई बात यीशु के लहू और *यीशु* नाम (जिसका अर्थ है "परमेश्वर छुड़ाता है," या पाप से बचाता है; मत्ती 1:21) और *ख्रिस्त* (इब्रानी शब्द "मसायाह" जिसका अर्थ "अभिषिक्त," नबी, याजक और राजा है का यूनानी शब्द) के साथ क्षमा का सम्बन्ध था। बेशक इस्राएली मसायाह के उद्देश्य को भौतिक रूप से पूरा होने को देख रहे थे, परन्तु परमेश्वर की इच्छा आत्मिक उद्देश्य को पूरा करने की थी।

जिस बपतिस्मे की यीशु ने आज्ञा दी

जिस बपतिस्मे के लिए यीशु ने सिखाया वह नहीं बल्कि बपतिस्मा देने वाले या कलीसिया पर उस अधिकार पर आधारित है जो स्वर्ग से पृथ्वी तक फैला हुआ है (मत्ती 28:18, 19)। जो लोग यीशु के निर्देश के अनुसार बपतिस्मा लेते हैं वे उसके अधिकार को मान रहे हैं, इसलिए, उनका बपतिस्मा *उसके नाम में हो रहा है*। यदि कोई व्यक्ति मनुष्य की

शिक्षा पर आधारित किसी बपतिस्मे को समझकर उसे मान लेता है, और यीशु मसीह द्वारा सिखाए गए बपतिस्मे को नहीं समझता और नहीं मानता, तो वह व्यक्ति यीशु मसीह के नाम में नहीं बल्कि उस व्यक्ति या कलीसिया के नाम में अर्थात उसके अधिकार से बपतिस्मा ले रहा है।

यूहन्ना 3:3-5

यीशु ने सिखाया कि स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने के लिए जल और आत्मा से नया जन्म लेना आवश्यक है (यूहन्ना 3:3-5)। यूहन्ना और यीशु द्वारा सिखाया जाने वाला पापों की क्षमा के लिए मन फिराव का तैयारी का बपतिस्मा जल और आत्मा से नया जन्म नहीं था। स्वर्ग का राज्य निकट तो था, परन्तु यह अभी आया नहीं था (मत्ती 4:17)। उस बपतिस्मे में जिसमें केवल पापों की क्षमा ही शामिल थी किसी को इस राज्य में प्रवेश करवाने की शक्ति नहीं थी, जो अभी आया ही नहीं था। पशुओं के बलिदान लाने वालों की तरह यह बपतिस्मा लेने वाले पापों की क्षमा पाकर स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं पा सकते थे (लैव्यव्यवस्था 4:20, 26, 31, 35; 5:10, 13, 16, 18; 6:7; 19:22)। स्वर्ग के राज्य में प्रवेश के लिए *केवल* पापों की क्षमा ही काफी नहीं है। राज्य में प्रवेश करने वालों के लिए जल और आत्मा से नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है, जिससे नया जीवन और अपने राज्य के राजा के रूप में उनका सम्बन्ध मसीह के साथ बनता है (रोमियों 6:4; गलतियों 3:27; कुलुस्सियों 2:12, 13)।

इस नये जन्म का जल बपतिस्मा है (प्रेरितों 8:12, 38, 39) और जन्म में आत्मा की गाड़ी जीवनदायक बीज अर्थात परमेश्वर का वचन है (लूका 8:11; यूहन्ना 6:63)। यह व्याख्या यीशु की शिक्षाओं और शेष नये नियम के साथ मेल खाती है (लूका 8:11, 12; प्रेरितों 11:14; 1 पतरस 1:23; आदि)।

फ्रेड्रिक डेल ब्रूनर ने यूहन्ना 3:5 पर सही टिप्पणी की:

> जल व आत्मा के दान को यूहन्ना 3:5 के ''जल *और* आत्मा से'' की तरह ही जोड़ा जा सकता है। यूहन्ना ''आत्मा'' से पहले दूसरा ''से'' (*ex*) नहीं लगाता जैसे कि वह दो अलग-अलग घटनाओं का वर्णन कर रहा हो। एक ex केवल एक ही अवसर का वर्णन करता है। फिर तो यह एकबारता अनिश्चित भूतकाल क्रियारूप कर्मवाच्य gennëthë द्वारा स्थापित होती है जिसका मूल अर्थ जल और आत्मा से ''*एक बार* जन्म'' है। ...
>
> आत्मिक रूप से एक मनुष्य केवल एक ही बार जन्म लेता है और वह जन्म ''जल और आत्मा से'' है।[1]

यीशु ने इसी एक-बार के जन्म का प्रचार करने के लिए अपने अनुयायियों को संसार में भेजा जो इसे लेने वाले सब लोगों को स्वर्ग के राज्य में लाता है (मरकुस 16:15, 16)।

मरकुस 16:15, 16

यीशु ने अपने चेलों को निर्देश दिया कि ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:15, 16)। उद्धार से सम्बन्धित *सब* शर्तों पर विचार करते समय हमें चाहिए कि केवल इस कथन पर ही नहीं बल्कि इसके साथ मेल खाते बाइबल के अन्य कथनों पर भी विचार करें। उद्धार में यीशु की पहचान (यूहन्ना 8:24) और उसकी भूमिका की समझ के साथ-साथ अन्य प्रत्युत्तरों जैसे कि मन फिराव (लूका 24:47) और अंगीकार (रोमियों 10:9, 10) भी आवश्यक है।

मरकुस 16:15, 16 के बिना भी उद्धार के बारे में पता चल सकता है। परन्तु, इस पद को समझने से उद्धार पाने के लिए परमेश्वर की शर्तों को एक-एक करके समझने में सहायता मिलती है।

NASB में एक अच्छे कारण से मरकुस 16:16 का अनुवाद इस प्रकार किया है, ''He who has believed and has been baptized shall be saved'' अर्थात जिसने विश्वास किया है और बपतिस्मा लिया है, उसी का उद्धार होगा। इस अनुवाद को यूनानी भाषा का समर्थन प्राप्त है। यूनानी भाषा में मुख्य क्रिया के बाद ''shall be saved'' ''has believed'' और ''has been baptized'' अनिश्चित भूतकाल कृदंत हैं। अनिश्चित भूतकाल कृदंत का महत्व यह है कि यह मुख्य क्रिया के कार्य से पहले होने वाले कार्य को व्यक्त करता है, न कि मुख्य क्रिया के कार्य के बाद के कार्य को। इस पद में अनिश्चित भूतकाल ''believed'' और ''baptized'' संकेत देते हैं कि ये मुख्य क्रिया के कार्य ''shall be saved'' से पहले होते हैं, जिसका अर्थ यह है कि यीशु कह रहा था कि उद्धार पाने से पहले व्यक्ति को विश्वास करके बपतिस्मा लेना आवश्यक है।

सी. डी. ऍफ. मोऊल ने यूनानी क्रियाओं के बारे में एक वाक्य में बताया, कि वर्तमान कृदंत और मुख्य क्रिया द्वारा व्यक्त किया कार्य समय के अनुरूप है, जबकि अनिश्चित भूतकाल कृदंत उस कार्य की बात बताता है जो मुख्य क्रिया के उस कार्य से पहले हुई।[2]

मोऊल ने इस नियम के दो तथाकथित अपवादों का खण्डन किया।

जेम्स एच. मोल्टन, मैक्सिमिलियन ज़रविक (जोसेफ़ स्मिथ के अनुवाद के अनुसार), ए. टी. रॉबर्टसन, और अन्य भाषा विशेषज्ञ मानते हैं कि अनिश्चित भूतकाल कृदंत हमेशा किसी वाक्य की मुख्य क्रिया से पहले होने वाले कार्य को व्यक्त करता है और अनिश्चित भूतकाल का कोई और प्रयोग असम्भव है।[3]

यह तथ्य कि संसार के अच्छे से अच्छे व्याकरण वेत्ता यह निष्कर्ष निकालते हैं कि अनिश्चित भूतकाल कृदंत कभी भी मुख्य क्रिया के कार्य के बाद नहीं है, का अर्थ है कि ''shall be saved'' के बाद न तो ''has believed'' और न ही ''has been baptized'' आ सकता है। उद्धार के बाद बपतिस्मा को रखना व्याकरण के हर नियम का उल्लंघन है। इसलिए, यीशु के कहने का अर्थ अवश्य ही यह होगा कि सुसमाचार पर विश्वास करना और बपतिस्मा उद्धार से पहले हो।

यूनानी भाषा में वाक्य रचना सुसमाचार पर विश्वास करने और बपतिस्मा लेने को ''उद्धार'' पाने से पहले अनिवार्य कार्य बना देता है। यदि ''has been baptized'' को ''shall be saved'' के बाद रखा जाता तो ''has believed'' को भी ''shall be saved'' के बाद रखा जाता; क्योंकि समुच्चय बोधक ''और'' (यू.: kai) के साथ मिलाकर दोनों वाक्यांश एक ही क्रिया का प्रयोग करते हैं। उद्धार को बपतिस्मे के बाद रखने के बजाय पहले रखने की इच्छा रखने वाले लोग इस आयत में यूनानी भाषा और हमारे प्रभु की शिक्षा के साथ अन्याय करते हैं। मरकुस 16:16 अनिश्चित भूतकाल कृदंत के नियम का अपवाद नहीं है, इसलिए यीशु ने कहा कि उद्धार पाने से ~ पहले ~ विश्वास करना और बपतिस्मा लेना आवश्यक है।

यूनानी भाषा का एक सिद्धांत इस आयत में लागू होता है। यीशु यह नहीं कह रहा था कि विश्वास और बपतिस्मा अलग-अलग कार्य हैं। कोई व्यक्ति ''has believed'' का कार्य समाप्त नहीं करता और फिर दूसरा कदम ''has been baptized'' उठाता है। यूनानी वाक्य रचना इसकी अनुमति नहीं देती।

बल्कि, इससे संकेत मिलता है कि दोनों कार्य अलग-अलग न होकर एक ही समय पर होते हैं और आपस में मिल जाते हैं। इसलिए, इस आयत का अनुवाद इस प्रकार हो सकता है, ''बपतिस्मा पाया हुआ विश्वासी उद्धार पाएगा'' या ''बपतिस्मा लेते समय विश्वास करने वाला'' उद्धार पाएगा।

इस पद में, लूका ने विश्वास की प्रेरणा से बपतिस्मे को उद्धार से पहले रखकर बपतिस्मे और विश्वास को इस प्रकार से जोड़ दिया कि उन्हें अलग करना नामुमकिन है। उद्धार न तो अकेले विश्वास पर और न ही अकेले बपतिस्मे पर आधारित है; उद्धार उसी को मिलेगा जो सुसमाचार पर विश्वास करके बपतिस्मा लेता है।

ध्यान दें कि प्रचार सुसमाचार का ही किया जाना है (मरकुस 16:15); इसलिए, विश्वास सुसमाचार पर ही होना चाहिए (मरकुस 1:15)। सुसमाचार में यह तथ्य शामिल है कि यीशु ही मसीह है, वह क्रूस पर चढ़ाया गया, जी उठा, महिमा पाया हुआ प्रभु है जो हमें हमारे पापों से छुड़ाकर स्वर्ग में अनन्त जीवन दे सकता है (1 कुरिन्थियों 15:1-4)। यदि सुसमाचार में हमारे पापों के लिए यीशु की मृत्यु शामिल है, तो बपतिस्मा लेने वाले को बपतिस्मा लेते समय विश्वास करना चाहिए कि यीशु की मृत्यु उसे उसके पापों से उद्धार दिला रही है। यदि यीशु की मृत्यु से उसको उद्धार नहीं मिल रहा है, तो बपतिस्मा लेते समय वह सुसमाचार पर विश्वास नहीं कर रहा है, जो कि इस पद में यूनानी संरचना द्वारा दी गई स्पष्ट शर्त है।

उद्धार के लिए सभी आवश्यक शर्तें मरकुस 16:15, 16 में शामिल हैं, क्योंकि सब शर्तें सुसमाचार में पाई जाती हैं। परन्तु, सभी शर्तों का विशेष रूप से वर्णन *नहीं* किया गया; अर्थात सुसमाचार के सम्पूर्ण संदेश का वर्णन इस आयत में नहीं किया गया। सुसमाचार में शामिल *सभी* बातों को समझने के लिए पवित्र शास्त्र के दूसरे कथनों की समझ होनी आवश्यक है; इसलिए बपतिस्मा पाए हुए विश्वासी को उद्धार से पहले पवित्र शास्त्र की

दूसरी बातें सीखनी आवश्यक हैं।

यूहन्ना 3:16, 36

यीशु ने यह कहकर कि ''जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए'' (यूहन्ना 3:16) और ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा'' (मरकुस 16:16) अपनी ही बात का विरोध नहीं किया। अनन्त जीवन विश्वास करने और बपतिस्मे के साथ पिछले पाप से उद्धार से ही जुड़ा हुआ है। विश्वास करना किसी के जीवन का *चलता रहने वाला* पहलू है, जबकि बपतिस्मा विश्वास के परिणामस्वरूप *एक बार की घटना है* (इफिसियों 4:5)।

यूनानी भाषा में ''believes'' अर्थात ''विश्वास करे'' (यूहन्ना 3:16, 36) वर्तमान कृदंत है।

इसका अर्थ यह है कि अनन्त जीवन उन्हें दिया जाता है जो यीशु में विश्वासी *बने रहने* के कारण उसकी आज्ञा मानने के लिए प्रेरित होते हैं (लूका 6:46; मत्ती 7:21; 28:20)। ऐसी आज्ञाकारिता के बिना कोई जीवन को नहीं देख सकता बल्कि उस पर परमेश्वर का क्रोध बना रहता है (यूहन्ना 3:36)। ''न माने'' (यूहन्ना 3:36में) यूनानी शब्द *अपेथो* है जिसका अर्थ रोमियों 2:8; 10:21; 1 पतरस 2:7, 8; 3:1, 20; 4:17 के अनुवाद की तरह ''अवज्ञा,'' ''आज्ञा न मानना,'' ''अवज्ञाकारी'' है। ऐसा वाक्य दिखाता है कि यीशु द्वारा प्रस्तुत किए अनन्त जीवन को पाने की इच्छा से पहले विश्वास के साथ आज्ञा मानना भी आवश्यक है। यीशु के अनुसार बपतिस्मा आज्ञा मानने का ही एक भाग है जो अनन्त उद्धार दिलाता है (इब्रानियों 5:9; तु. मरकुस 16:16)।

कई लोग बहस करते हैं कि किसी को मसीह की *आशीषों में* लाने के लिए बपतिस्मा अनिवार्य नहीं है,[4] क्योंकि उनका मानना है कि मसीह में लाने के लिए *केवल* विश्वास ही आवश्यक है। वे बहस करते हैं कि यूहन्ना 3:16, 36 जैसे वाक्यांश की तरह ''पर'' (यूनानी शब्द *eis* जिसका अधिकतर स्थानों में अर्थ ''में'' एक होता है और कुछ अर्थ में सब मामलों में कुछ हद तक वही अर्थ रहता है) का अर्थ है कि कोई मसीह *में* विश्वास करता है। इसके साथ समस्या यह है कि ऐसे कई पदों में *निरन्तर क्रिया* को व्यक्त करता (जैसे पहले ही कहा गया है) वर्तमान कृदंत होता है। क्या कोई यीशु ''पर,'' *eis* (में) विश्वास करके यीशु के *बाहर* से यीशु *में* आता *रह* सकता है? ऐसा होना असम्भव होगा। ''पर विश्वास'' का अर्थ यह होगा कि कोई यीशु की इच्छा को मानकर उसमें भरोसा रखना *जारी* रखता है।

पौलुस ने यह कहते हुए कि कोई मसीह में प्रवेश कैसे करता है ''बपतिस्मा लिया'' शब्द का इस्तेमाल अनिश्चित भूतकाल का संकेत देने के लिए किया (रोमियों 6:3; गलतियों 3:27)। *अनिश्चित भूतकाल* कार्य है, इसलिए यह संकेत देता है कि पूरा होने पर बपतिस्मा वह घटना है जिससे विश्वासी मसीह ''में'' *eis* आ जाता है। न अकेला विश्वास किसी को मसीह में लाता है और न ही *अकेला* बपतिस्मा। बपतिस्मा वह बिन्दु है जहां पर विश्वासी

को मसीह *में* लाया जाता है, जहां उसे उद्धार तथा हर प्रकार की आत्मिक आशीषें मिलती हैं।

कई लोग बहस करते हैं कि ''विश्वास करने को'' *eis* उपसर्ग के साथ इस्तेमाल करने से कोई मसीह *में* आता है, परन्तु प्रेरितों 2:38 वाले *eis* का अर्थ यह नहीं हो सकता कि बपतिस्मे के समय कोई पापों की क्षमा *में* प्रवेश करता है। पतरस ने विश्वास करने वाले यहूदियों से कहा कि उनमें से हर एक के लिए पापों की क्षमा (हिन्दी बाइबल में ''into'' का अनुवाद ''के लिए'' किया गया है) *eis* (2:38) बपतिस्मा लेना आवश्यक था। परन्तु, यदि कोई यह दावा करना चाहे कि *eis* का अर्थ है कि कोई मसीह ''में'' (into) विश्वास करता है (यूहन्ना 3:16, 36) तो *eis* को प्रेरितों 2:38 में ''में'' अर्थात into का अर्थ क्यों नहीं दिया जाता? इसका अर्थ होगा कि पतरस ने सबको पापों की क्षमा ''में'' बपतिस्मा देने के लिए कहा।

''विश्वास'' कार्य की क्रिया नहीं है। यही कारण है कि ''विश्वास'' के साथ *eis* जुड़ जाने से इसका अनुवाद ''में'' (into) के बजाय ''पर'' किया जाता है।

सारांश

अपनी मृत्यु, गाड़े जाने व पुनरुत्थान के बाद यीशु ने अपने चेलों को सब जातियों के लोगों को चेले बनाने के लिए सारे संसार में भेजा। ये पहले संदेशवाहक पापों की क्षमा के लिए तैयारी के मन फिराव के उस बपतिस्मे को जानते थे जिसका प्रचार यीशु और यूहन्ना ने किया था। यह बपतिस्मा लोगों को मसीह के राज्य अर्थात सांसारिक तत्व जिससे मसीह की कलीसिया बनी है, में बपतिस्मा पाने के लिए लोगों को तैयार कर रहा था।

इन पहले परिवर्तितों के लिए पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा कोई नई बात नहीं थी, क्योंकि उनमें से बहुत से लोग तैयारी के बपतिस्मे के बारे में जानते थे। उनके लिए नई बात थी मसीह के राज्य और अधिकार में बपतिस्मा। यीशु से निर्देश पाकर और पवित्र आत्मा से बपतिस्मा लेने के थोड़ी देर बाद (प्रेरितों 2:4) उन्हें यीशु की सिखाई बातें याद आने में सहायता मिलनी थी (यूहन्ना 14:26)। प्रेरितों ने पहले यरूशलेम में सुसमाचार का प्रचार किया और फिर सारे संसार में जाकर प्रचार किया।

पाद टिप्पणियां

[1]फ्रैड्रिक जेल ब्रूनर, *ए थियोलोजी ऑफ़ द होली स्पिरिट* (ग्रैंड रैपिड्स मिशि.: Wm. B. ईरडमैन्स पब्लिशिंग कं., 1970), 257-58. [2]सी. एफ. डी. मोऊल, ऐन इडीयम-बुक ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट, 2d ed. (कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, 1953), 99. [3]मैक्सिमिलियन ज़रविक, बिबलीकल ग्रीक, अनु. जोसेफ स्मिथ (रोम: पू.न. 1963), 88. [4]इन आशिषों में ''नई सृष्टि'' बनाया जाना (2 कुरिन्थियों 5:17), ''अपराधों की क्षमा'' (इफिसियों 1:7), ''उद्धार'' (2 तीमुथियुस 2:10), ''अनन्त जीवन'' (1 यूहन्न 5:11), और ''हर प्रकार की आत्मिक आशिष'' (इफिसियों 1:3) शामिल है।